शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आधुनिक हिन्दी कहानी का युग संचरण

डॉ. शाजिया खान
श्री अटल बिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

वस्तुतः कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति मनुष्य में आदिकाल से चली आ रही है तथा हमारे प्राचीन वाग्डमय - वेद, उपनिषद, पुराण, ब्राह्मण ग्रंथ, महाभारत, रामायण आदि एक दृष्टि से कथासंकलन ही हैं, क्योंकि उनमें अनेक कथाएँ बिखरी पड़ी हैं। इसी प्रकार बौद्ध जातक, पंचतंत्र, हितोपदेश, वृहतकथा, कथासारित्सागर, बैताल पंचविंशतिंका, शुक्र सप्तति, सिंहासन दात्रिशिका, दशकुमार चरित आदि प्राचीन ग्रंथों में भी कई प्रकार की कथाएँ संकलित हैं। साथ ही दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता नामक कृति ब्रजभाषा गद्य में लिखी गई कहानियों का संकलन ही है। लेकिन कहानी का आधुनिक रूप इनसे भिन्न और विकसित परम्परा की देन है। इतनी समृद्ध और विविधता भरी कथा - परम्परा के बावजूद आधुनिक हिन्दी कहानी अधिकांशतः पश्चिम के सम्पर्क से ही विकसित हुई।

भूमिका

बीसवीं शताब्दी की शुरूआत में पश्चिम में आधुनिक कहानी में लगभग एक शताब्दी की यात्रा सम्पन्न कर ली थी। उसके अनेक रूप और परिभाषाएँ बन और टूट चुकी थी। अंग्रेजी के ओ हेनरी, फ्रांस के मोपासाँ और रूस के चेखव - ये तीन कालजयी कहानीकार कहानी को आधुनिक रूप प्रदान कर चुके थे।

ऐसा नहीं है कि भारतीय साहित्य में इस बीच कहानी का प्रवाह रूक गया हो। लोककथा के रूप में तो वह अक्षुण्ण रहा ही, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और लगभग सभी भाषाओं मे कहानियाँ निरंतर लिखी जाती रहीं। बात सिर्फ इतनी है कि हिन्दी ही नही, भारतीय भाषाओं में भी कहानी अपने आधुनिक रूप को पश्चिम के सम्पर्क से ही प्राप्त करती है। इस सम्पर्क में प्रभाव और प्रेरणा दोनों ही सक्रिय रही हैं।

हिन्दी कहानी सन् 1990 से लेकर प्रेमचन्द व प्रसाद के सम्पूर्ण जीवनकाल तक अविच्छिन्न रूप से बराबर चलती रही और उत्तरोत्तर विकासोन्मुख ही रही अतः उसमें अनेक प्रयोग भी हुए।

वास्तव में आज का कथाकार व्यक्ति को उसकी समग्रता में देखने का आग्रह करता है। व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश, मानसिक अंतर्द्वंद्वों तथा व्यावहारिक जीवन के तकाजों और आवश्यकता की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया के रूप में पाना चाहता है। इसलिए कहानी का कोई भी तत्व निमित्त या आलम्बन बनकर नहीं, स्वयं आश्रय या विषय वस्तु बनकर आता है, "परिणामतः इन 10 वर्षो की कोई भी अच्छी कहानी उठा लीजिये - उसका प्रभाव या परिणति झटके के साथ देखा या पाया हुआ सत्य नहीं होता। न वह हथौड़े की चोट की तरह सारे अस्तित्व को झनझनाती है न चुभे तीर की तरह टीसती है। वह तो अगरूगंध की तरह समस्त चेतना पर छा जाती है और स्वयं उसका अंग बन जाती है।"

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आज की कहानी

इस प्रकार अनजाने ही आत्मा को संस्कार और दृष्टि देती है। "यह कहना बहुत बड़ी गर्वोक्ति न होगी कि मानव आत्मा की शिल्पी आज की कहानी में ही पहली बार अपनी भूमिका का सही निर्वाह करने का प्रयत्न करता है। व्यक्ति को समग्रता में देखने का आग्रह या व्यक्तिगत सामाजिकता का बोध कथाकार के लिए दुहरा दायित्व देता है। सबसे पहले व्यक्ति अपना दायित्व न खो दे उसे अधिक से अधिक ईमानदारी, आत्मीयता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया जाये।"

आधुनिक हिन्दी कहानियाँ अपने समय को अपने भीतर जिलाती हुई आगे बढ़ रही है। वैश्वीकरण के कारण समाज में जो सामाजिक उथल-पुथल आई है। इस सदी की कहानियाँ ऐसे सामाजिक सरोकारों को लेकर सामने आ रही हैं। आधुनिक कहानियों का वैशिष्ट्य निर्धारण करने में निम्नलिखित कारक महत्वपूर्ण है -

1 कथानक की दृष्टि से -

"वर्तमान आधुनिक कहानी अपने दायित्वों को खोजकर सामाजिक परम्पराओं के विश्लेषण की वैज्ञानिक दृष्टि से आने वाले कल की एक धुंधली तस्वीर भी सामने रख रही है। जो बाजारी परमपराओं की चासनी से लिपटी दिखाई देती है।"

आज ज़िन्दगी का समय चक्र केवल घूम ही नहीं रहा है, बल्कि मशीन से जुड़कर तेज रफ्तार में दौड़ रहा है। इसी तेज रफ्तार में दुनिया भर का बाजार भी इंसानी जीवन में समा गया है। आज की कहानियों का कथानक समकालीन संदर्भ से जुड़कर एक बिल्कुल नई और स्वतंत्र सोच का परिणाम है।

वर्तमान कहानियों के कथानक आत्मिक और भौतिक के बीच द्वंद्व न होकर दोनों के बीच समझौतों की कोशिश है। इस तरह की वे दोनों को समृद्ध करे न कि खारिज।

आज की कहानियें का कथानक अलग तरह के कथाशास्त्र को जन्म दे रहा है। कहानीकार आलिया खान, उषा वर्मा, उषा राजे सक्सेना, कीर्ति चौधरी, दिव्या माथुर, सलमा जैदी, साफिया सिद्धीकी, बानों अरशद, शाहिदा अहमद कुछ प्रमुख नाम हैं। जिनकी कहानियों को पढ़कर गरीब-अमीर में विभक्त दुनिया की खबर मिलती है।

2 चरित्र की दृष्टि से -

आज की कहानियाँ महानगरीय माहौल में अधिक जीवित प्रतीत होती है। अतएव आज की कहानियों में खूबसूरत चेहरों वाले चरित्रों की आंतरिक विद्रुपताएँ स्पष्ट नज़र आती है। यही कारण है कि पुरूष स्वार्थपरता, घरेलू हिंसा, बाल यौन शोषण, विस्थापन मौका परस्ती आदि विषयों पर प्रहार करने वाले चरित्रों की भरमार आज की कहानियों में दिखाई देती है।

आज की कहानियों में समाज का चाहे उच्च, चाहे निम्नवर्गीय चरित्र हो पारदर्शिता के साथ चित्रित हुआ मिलता है। समय बोध का तकाजा, वैश्वीकरण की मार, अलगाव इत्यादि प्रहारों से आहत चरित्र ही आज की कहानियों का मूलस्वरूप है।

3 शिल्प की दृष्टि से -

आधुनिक कथासाहित्य के परिदृश्य में युवा पीढ़ी का सार्थक रचनात्मक हस्तक्षेप कई दृष्टियों से उल्लेखनीय है। अब हिन्दी कहानी ने युग चेतना को अभिव्यक्त करने वाली सक्षम विधा के रूप में स्थान पा लिया है। इसकी प्रमुख वजह युवापीढ़ी का रचनात्मक नवोन्मेष है। जिसने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहानी की वस्तु और स्थापत्य को नए रचनात्मक बोध से गढ़ा है। जहाँ सिर्फ कथा युक्तियों में प्रयोग की बहुलता नहीं है, बल्कि सामयिक स्थितियों और यथार्थ के प्रति सोंचने समझने की बहुआयामी दृष्टि भी है। हिन्दी कहानी को 'नव्य' बनाती हुई इस पीढ़ी ने अपनी भाषा और संवेदना के अपने अंतर और बाह्य जगत को साक्ष्य बनाया है।

"आज के कहानीकारों की एक बड़ी विशेषता है कि सत्य के अनावरण के दरमियान वह कथा-अकथ सब कुछ कहती है, परन्तु इस प्रक्रिया में उनकी भाषा कहीं फुहड़ या अश्लील नहीं होती। कविता और गद्य के बीच की पारम्परिक दीवार ढ़हाती इस गरिमामयी भाषा की बदौलत विचारों के प्रक्षेपण के दौरान भी आज की कहानियों का कहानीपन अक्षुण्ण रहता है। निःसंदेह शिल्प की दृष्टि से आज की कहानियें से होकर गुजरना एक अनुभव से होकर गुजरना है।"

निष्कर्ष

हिन्दी कहानी के विकास का यह विंहगावलोकन हैं। आधुनिककाल में हमारा हिन्दी कहानी साहित्य बहुमुखी उन्नति कर रहा है और मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, भावनात्मक यथार्थवादी, आदर्शवादी, पारिवारिक, हास्यरस प्रधान, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक वैज्ञानिक व शिकार आदि विषयों से संबंधित कहानियाँ प्रकाश में आ रही हैं तथा कहानीकारों की संख्या भी उत्तरोत्तर वृद्धि कर रही हैं। अब हिन्दी में न केवल विदेशी कहानियाँ बल्कि दक्षिण भारतीय भाषाओं की भी अनेक कहानियाँ अनुदित हो चुकी हैं। अतः हम देखते हैं कि हमारा कहानी साहित्य विकास की उस सीमा तक पहुँचा है जहाँ से कि वह किसी भी देश की सुन्दरतम् कहानियों से प्रतिद्वंदिता कर सकता है।

संदर्भ सूची

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य दुर्गाशंकर मिश्र

2 आधुनिक हिन्दी कहानी समपादक धनंजय वर्मा, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी

3 जीवन के बड़े सत्यों का आख्यान, डॉ. विजय प्रकाश 'परिकथा', नवम्बर-दिसम्बर 08, पृष्ठ 93

4 कहानी: कुछ नोट्स, लेखक एम. हनीफ मदार, 'परिकथा', अंक नवम्बर-दिसम्बर 08

5 कहानी स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव,: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, पृष्ठ 6